समुदाय एवं पंचायत की संयुक्त मजबूत प्रबंधन व्यवस्था से आज भी खरा है मेघराज सर तालाब

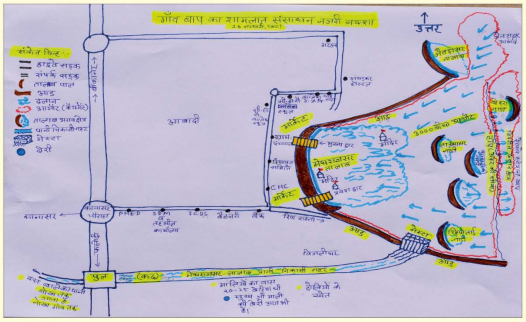

पांच सौ साल पहले मेघराज जी पालीवाल ने तालाब बनवाया इस लिए इसका नाम मेघराज सर पड़ा। तकनीकी सूझ-बूझ से बनाया गया। 3000 बीघा आगौर के पानी को घेर कर अलग-अलग नाडियों व फिर तालाब मे एकत्रित किया गया। ऊंचे क्षेत्र से नीचे तक बरसात के पानी को कहां कैसे सहेजना है, इसकी समझ उस जमाने में थी।
जैतड़ासर तालाब व आगौर में बनाई गई चार नाडियां भर जाने के बाद मेघराज सर में पानी आता था। तालाब भर जाने के बाद पानी निकासी के लिए नहर बनाई गई जिससे खेतों में पानी जाता था। अच्छी फसल व सब्जियां पैदा होती थी। नहर के किनारे 20-25 बेरियां थी। तालाब का पानी समाप्त होने के बाद बेरियों के पानी का उपयोग शुरू होता था। अब बेरियां मिट्टी से भर गई।

- धड़े वार मुखिया तय होते थे, जो तालाब की प्रबंधन व्यवस्था देखते थे। नियम बने हुए थे जिनकी पालना सभी करते थे। नियम तोड़ने वालों को चेतावनी व बाद में दंड का प्रावधान था।
- तालाब के आगौर में पशुओं की चराई बंद थी। तय रास्ते से पानी पिलाने के लिए लाते थे। पानी पिलाने के बाद उसी रास्ते से निकालना होता था।
- भैंस अंदर नहीं बैठ सकती थी। बैठने पर गांव के लोग निकालते, फिर पता करते, किसकी भैंस है, मालिक को बुलाकर चेतावनी देते। बाद में आती तो पंचायत की फाटक में डालते, जुर्माना देकर छुड़ाते थे।
- स्नान करना, पाल, किनारे पर बैठ कर शराब पीना मना है। पहले समझाते थे, दंड लगाते थे, अब कानूनी कार्यवाही करते हैं।
- श्रमदान से मिट्टी निकालने व सफाई का काम होता था। मुखियाओं के निर्णय के बाद हैलारा पाल पर खड़ा होकर श्रमदान की सूचना देता था। घर कम थे, आवाज पहुंच जाती थी। एक-दूसरे को सूचना करते थे, तय दिन सभी घरों से लोग औजार तगारी लेकर आते थे। जिस घर से कोई नहीं आता था, उसकी चर्चा होती थी। लोग शर्म के मारे भी आते थे।
- बैल या ऊंट गाड़े और अब टैंकर के टायर पानी में डुबोना मना है। पहले टंकी भरने के लिए दो व्यक्ति आते थे। एक तालाब से बाल्टी भरता था, दूसरा टंकी में डालता था। टैंकर मशीन से भरता है, इस लिए पानी से दूर खड़ा करना होता है।
- टैंकर भराई के लिए पंप सैट लगा है। भराई के पैसे पंचायत लेती है। पंचायत की तरफ से देखभाल के लिए तीन व्यक्ति रखे हुए हैं।
- अब श्रमदान नहीं होता। ग्राम पंचायत सफाई एवं मिट्टी निकालने तथा विकास का काम करती है। काम कराने से पहले धड़े वार मुखियाओं को बुलाकर सलाह लेती है।

- बरसात होने पर कचरा आता है उसे बाहर निकालते हैं। गोबर-मींगणी खेतों वाले ले जाते हैं। नहर का पानी डालने से नील का जाल बन जाता है, उसे ग्राम पंचायत हर साल साफ कराती है।
- पाल पर वृक्षों की कटाई छंगाई करना मना है। आगौर मगरा कठोर है, इस कारण से उसमें पहले भी वृक्ष नहीं थे।
- झाड़-झंखाड़ उगते हैं, तो काट कर साफ कराते हैं, ताकि उनके पास मिट्टी व कचरा नहीं उगे। 500 साल पुराने खेजड़ी के वृक्ष भी जीवित हैं।
- नियमों की पालना में पालीवाल समुदाय के लोग अगुवाई व नेतृत्व करते हैं। अन्य समुदाय के मुखियाओं को भी शामिल करते हैं।
- ग्राम पंचायत द्वारा पाल पर पांच-छः स्थानों पर नियम लिखवाए गए हैं।
- 25 किलोमीटर के दायरे में आने वाले गांव संकट के समय यहां से पानी ले जाते थे, पशुओं को पानी पिलाने लाते थे। अब टैंकर से मंगवाते हैं।
- बीस सालों में दो बार तालाब खाली हुआ है। खाली होता है, तब मिट्टी निकालने का काम किया जाता है।
- तालाब की गहराई 60 फुट तथा लंबाई-चौड़ाई लगभग आधा किलोमीटर है।
- मिट्टी पाल पर ही डालते हैं। खेतों वाले नहीं ले जाते। मनाई नहीं है। लोग ले जाते नहीं हैं।
- तालाब की व्यवस्था सुंदर है। तरह-तरह के पक्षी भी आते हैं। जैव विविधता को संरक्षण मिलता है।

जैव विविधता का संरक्षक है तालाब

EUROPEAN UNION
Financial Support

ग्राविस

FES
FOUNDATION FOR ECOLOGICAL SECURITY

उन्नति
UNNATI